B.A Semester third

Unit -1

By ALPANA KUMARI

Paper-5 Geographical thought and three Southern Continents

Topic Name - भूगोल के लक्ष्य और उद्देश्य

Aim and Purpose of Geography

भूगोल का उद्देश्य संसार सम्बंधी ज्ञान में वृद्धि करना है और पृथ्वी तल का अध्ययन मानव के संसार के रूप में करते हुए क्षेत्रों या स्थानों की भिन्नताओं और समाकलन को समझना है। मानवीय समृद्धि के लिए प्रादेशिक संसाधनों का अध्ययन और प्रयोग करने में सक्रिय योग देते हुए पृथ्वी पर विभिन्न देशों की प्रादेशिक विकास योजनाओं में तथा राष्ट्रीय विकास योजनाओं में योगदान देना है।

सरल भाषा में कहा जा सकता है भूगोल का उद्देश्य भूमि और मानव की यथार्थताओं का अध्ययन करना तथा मानवीय उन्नति के लिए स्थानिक संगठन को समझना है।

भूगोल में पृथ्वी तल के विभिन्न तथ्यों के अध्ययन देश काल और सम्बंधों के त्रिपक्षीय दृष्टिकोण से होते है। इसमें भौत और अभौत दृश्यों और घटनाओं का अध्ययन पृथ्वी को इस प्रकार समझने के लिए किया जाता है जिस प्रकार कि इस पर मानव वर्ग निवास करते है कार्य करते है मिलते-जुलते है परस्पर मिश्रित होते है और पृथ्वीतल के क्षेत्रों को रूपांतरित करके उनको आवास के योग्य बनाते है। हेक पार्थिक एकता के बराबर ही पृथ्वी के क्षेत्रों की विभिन्नताओं और विभेदो पर ध्यान देना चाहिए।

दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि भूगोल का उद्देश्य पृथ्वी तल के

(i) विभिन्न स्तरों के आधार पर विभिन्न क्षेत्रों भू,
(ii) वातावरण और मानव तत्वों के पारस्परिक सम्बंधों का तथा
(iii) व्यवस्थाओं के विभिन्न वितरणों की विवेचना करना और
(iv) संसाधन विकास योजना में सहयोग देना है।

अतः इस प्रकार कहा जा सकता है कि पृथ्वी का मानवीय संसार के रूप में वैज्ञानिक रीति से वर्णन तथा विकास में योगदान करना ही भूगोल का उद्देश्य है।

भूगोलवेत्ताओं का उद्देश्य पृथ्वी तल के प्रदेशों को समझना अर्थात् प्रदेशों के पार्थिव घटना - दृश्यों के साहचर्य की प्रणालियों को समझना और समझाना है।

अमेरिका की राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के तत्वधान में प्रमुख भूगोलवेत्ताओं की एक समिति ने 1965 में एक रिपोर्ट प्रकाशित की थी, जिसके अनुसार भूगोल का मुख्य उद्देश्य स्थानिक वितरणों तथा स्थानिक सम्बंधों के दृष्टिकोण से मानव वातावरण की प्रणाली का अध्ययन करना है।

भूगोल के समाकलित उद्देश्य (Integrated aim)

~~भूगोल~~ पृथ्वी तल के प्रतिरूप और प्रक्रम के आधार पर स्थानिक संगठन का अध्ययन करना भूगोल के उद्देश्य है।

जिसमें, क्षेत्रों का समाकलित अध्ययन, उनका कालिक परिवर्तन अर्थात समय के हिसाब से परिवर्तन उनका सांस्कृतिक अलगाव तथा वातावरण की पारिस्थतिक व्याख्या को भी सम्मिलित किया गया है।

भूगोल एक दूसरा समकालिन उद्देश्य प्रादेशिक संगठन और योजना में योगदान देना है।

प्रादेशिक संगठन तथा प्रादेशिक योजना में आवश्यक योगदान देने के लिए भूगोल के अध्ययन में निम्नलिखित प्रक्रियाओं को शामिल किया गया है:-

1. पारिस्थितिक विश्लेषण
2. स्थानिक विश्लेषण
3. प्रादेशिक सम्मिश्र विश्लेषण
4. प्रादेशिक संगठन तथा योजना।

भूगोल के उद्देश्य का यह मुख्य पक्ष है कि पृथ्वी तल के किसी क्षेत्र या प्रदेश के प्राकृतिक संसाधनों तथा मानवीय संसाधनों को इस प्रकार विकसित किया जाये कि उनके प्रयोग से उस क्षेत्र में अधिकाधिक मानवीय प्रगति हो सके, और उस प्रदेश की जनता समृद्धिशाली हो सके।

संसाधनों की अनुकूलतम उपयोग की व्यवस्था को क्षेत्र संगठन या प्रादेशिक संगठन भी कहते हैं।

वर्तमान भूगोल में मानवीय संसाधनों की महत्ता पर अधिकाधिक बल दिया जा रहा है। इसका कारण यह है कि प्राकृतिक संसाधनों का अनुकूलतम प्रयोग तभी हो सकता है जबकि किसी प्रदेश के समस्त वर्ग उन्नति और समृद्धि के लिए इच्छुक तथा प्रयत्नशील हो, और उसकी योजना में क्रियाशीलता हो।

इस प्रकार उद्देश्य पूर्ति के विचार से भूगोल एक व्यवहारिक विज्ञान है। किसी प्रदेश में संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग की योजना में सक्रिय भाग लेना भूगोल का व्यावहारिक पक्ष है।

अत निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि अस्तु के अनुसार भूगोल के उद्देश्य के 5 मुख्य पक्ष हैं जो निम्नलिखित हैं, —

(I) 'पृथ्वी तल' का अर्थात समस्त पृथ्वी के बाहरी तल तथा थोड़ी गहराई तक की प्रकाशकारी शैल परतों वायुमंडल की निचली परत और पृथ्वी पृथ्वी के और सम्बंधों का वर्णन करना है।

(II) स्थान, देश और काल के प्रसंग से भौतिक और मानवीय तथ्यों के वितरण को प्रकट करना।

(III) प्राकृतिक और मानवीय तथ्यों के पारस्परिक सम्बंधों का विवेचना करना।

(IV) विभिन्न प्रदेशों के समाकलित अध्ययन के

साथ उनके वातावरण की पारिस्थितिक व्याख्या करना और दूसरे प्रदेशों से उनकी तुलना करना तथा

(IV) प्रादेशिक संगठन के लिये प्रत्येक प्रदेश के संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग द्वारा मानवीय उन्नति के लिए संसाधन मूल्यांकन और संसाधन उपयोग की योजनाओं में पूर्ण रूप से योगदान देना है।